CHANDRAKANT DEVATALE KI KAVITAON MEIN SANSKRITIK SANKAT

Thesis submitted to

MAHATMA GANDHI UNIVERSITY, KOTTAYAM

For the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

By

RESMI M.N

Supervising Teacher

Dr. C. SUJA

Associate Professor & Head of the Dept. of Hindi
Nirmala College, Muvattupuzha

POST GRADUATE AND RESEARCH CENTRE

DEPARTMENT OF HINDI
NIRMALA COLLEGE
MUVATTUPUZHA

2017

From,

Dr. C. SUJA
Associate Professor &
Head of the Dept. of Hindi
Supervising Teacher
Nirmala College
Muvattupuzha

ANTI PLAGIARISM CERTIFICATE

This is to certify that the thesis **"CHANDRAKANT DEVATALE KI KAVITAON MEIN SANSKRITIK SANKAT"** submitted for the award of Degree of DOCTOR OF PHILOSOPHY in the Faculty of Language and Literature (HINDI) Mahatma Gandhi University, Kottayam is a record of bonafide research carried out by **Resmi M.N.** under my supervision. This work plagiarism checked and the plagiarism in the thesis is below 15% that is below the university agreed norms.

Place : Muvattupuzha

Date : 15/12/2017

Dr. C. SUJA

DR. SUJA. C.
Associate Professor
P.G. & Research Dept.of Hindi
Nirmala College
Muvattupuzha - 686 661

CERTIFICATE

This is to certify that this thesis entitled **"CHANDRAKANT DEVATALE KI KAVITAON MEIN SANSKRITIK SANKAT"** is a bonfide record of work carried out by **Smt. RESMI M.N.** under my supervision for the award of Ph.D Degree and no part of this has hither to submitted for a degree in any other university.

Dr. C. SUJA
Supervising Teacher
Associate Professor & HOD
Department of Hindi
Nirmala College
Muvattupuzha

Date : 15/12/2017

DR. SUJA. C.
Associate Professor
P.G. & Research Dept of Hindi
Nirmala College
Muvattupuzha - 686 661

DECLARATION

I, Resmi M.N, hereby declare that the thesis entitled **"CHANDRAKANT DEVATALE KI KAVITAON MEIN SANSKRITIK SANKAT"** is a bonafide record of work carried out by me for the award of Ph.D degree in the Faculty of Language and Literature of the Mahatma Gandhi University, Kottayam, Kerala and no part of this has hither to submitted for a degree in any other university.

Resmi

RESMI M.N
Post Graduate and Research Centre
Department of Hindi
Nirmala College
Muvattupuzha

Date : 15/12/2017

CERTIFICATE

Certified that Resmi M.N. is a bonafide Research Scholar in the Department of Hindi, Nirmala College, Muvattupuzha as per registration No.2575/A II Academic Dated 18.06.2008 of Mahatma Gandhi University and that the thesis **"CHANDRAKANT DEVATALE KI KAVITAON MEIN SANSKRITIK SANKAT"** is the out come of her genuine work at this centre.

Dr. C. Suja, Associate Professor, Department of Hindi, Nirmala College, Muvattupuzha has been her guide for the research work.

Place : Muvattupuzha

Date : 15/12/2017

Principal

NIRMALA COLLEGE MUVATTUPUZHA 686 661

PRINCIPAL
NIRMALA COLLEGE
MUVATTUPUZHA - 686 661

पुरोवाक्

साहित्य की विधाओं में कविता का अलग महत्व है। कम से कम शब्दों में अभिव्यक्ति को सक्षम बनाने में उसका कोई सानी नहीं। नये-नये अर्थ सन्दर्भों को उद्घाटित करने की क्षमता कविता को अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्न एक अस्तित्व प्रदान करती है। कविता प्रत्येक युग की सही साक्षी भी है। वह समसामयिक परिवेश के प्रति कवि की प्रतिक्रिया है और उनकी स्वानुभूति की अभिव्यक्ति भी। संस्कृति और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ कविता का संबन्ध गहरा होता है। इस बिंदु पर कविता सांस्कृतिक कर्म बन जाती है। अतः सांस्कृतिक संकट के इस दौर में कविता का इससे चिंतित होना स्वाभाविक है।

आज भारतीय संस्कृति देशी और विदेशी तौर पर कई तरह की चुनौतियों का सामना कर रही है। मानवीय मूल्यों पर केन्द्रित भारतीय संस्कृति का विरूपीकरण वर्तमान समय का सबसे बडा संकट है। यह संकट महज भारतीय संस्कृति का ही नहीं बल्कि पूरी मानवता का है। वर्चस्वशाली शक्तियाँ रूप बदलकर तीसरी दुनिया को अपने कब्ज़े में करने की कोशिश कर रही है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, नव-उपनिवेशीकरण और सांस्कृतिक साम्राज्यवादी के हथियार से लैस इस हमले में भारतीय संस्कृति के स्वत्व भी संकटग्रस्त हो रहा है। साथ ही सांप्रदायिक शक्तियाँ भी आक्रामक रूप धारण करते हुए भारतीय संस्कृति को घायल कर रही है। नतीजतन आज उपभोक्तावादी और बाज़ारू संस्कृति की गिरफ़्त से मुक्त नहीं है। यह अपसांस्कृतिक अभियान भारतीय संस्कृति को दिशाहीन कर रहा है और भारतीय जनता को भी।

सांस्कृतिक संकट का वर्तमान रूप ज़्यादा खतरेदार है। क्योंकि आज यह सांस्कृतिक हमला परोक्ष रूप में संपन्न हो रहा है। भूमण्डलीय नव-उपनिवेशवाद

भारतीय संस्कृति को विनाश की ओर ले जाने को कटिबद्ध है। आधुनिक बनकर जीने की चाहत से भारतीय युवापीढ़ी, सांस्कृतिक संकट की विपत्ति से अनजान होकर इस चंगुल में फंसते जा रही हैं। सांस्कृतिक संकट के वास्तविक स्वरूप और उसकी गहराई से जनता को सचेत कराने को साहित्य वचनबद्ध है। हिन्दी कविताओं के अध्ययन के दौरान इसमें चिन्हित सांस्कृतिक संकट की गहराई से मेरा परिचय हुआ। इससे संबन्धित अध्ययन की ज़रूरत मुझे महसूस हुई। तदनुसार मैं ने सांस्कृतिक संकट को शोध के लिए चुना। समकालीन कवियों में चन्द्रकान्त देवताले की कवितायें इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। उनकी कविता सांस्कृतिक संकट के परिवेश के प्रति चिंतित है, और साथ ही प्रतिरोध की जरूरत पर ज़ोर देनेवाली भी है। इसीलिए मैं ने चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में लक्षित सांस्कृतिक संकट को शोध के विषय के रूप में लिया। क्योंकि उनकी कवितायें सांस्कृतिक संकट से चिंतित है, और उनमें प्रतिरोध की अनिवार्यता को भी दर्शाया है।

समकालीन हिन्दी कवियों में चन्द्रकान्त देवताले को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनकी कवितायें समय के साथ, समाज के साथ सरोकार रखनेवाली है। अमानवीय व्यवस्था के प्रति विद्रोह करनेवाला कवि मानव-जीवन के विडम्बनाओं के प्रति चिंतित भी है। शब्दों को चखकर आनेवाला कवि सभी प्रकार के सामाजिक विसंगतियों को अपने ही भीतर महसूस करते हैं। इसलिए वे जन-सामान्य के कवि माने जाते है।

अध्ययन की सुविधा के लिए इस शोध प्रबन्ध को मैं ने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

पहला अध्याय 'समकालीन हिन्दी कविता और चन्द्रकान्त देवताले का कवि व्यक्तित्व' है। इसमें 'समकालीनता' पर विचार करते हुए समकालीन कविता की

मुख्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही चन्द्रकान्त देवताले के कवि-व्यक्तित्व को कविताओं के ज़रिए पहचानने का प्रयास भी किया गया है।

दूसरा अध्याय 'भारतीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक संकट' है। इसमें संस्कृति के मूल स्वरूप, और भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए सांस्कृतिक संकट की समस्या को समझने और उसकी गहराई को आँकने का प्रयास हुआ है।

'चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में सांस्कृतिक संकट के विभिन्न आयाम' तीसरा अध्याय है। इसमें चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं के ज़रिए सांस्कृतिक संकट के बहुआयामी स्वरूप को परखने की कोशिश की है। अलग-अलग मुखौटों में हमारे सामने उपस्थित सांस्कृतिक संकट की विपत्ती से जूझनेवाली कविताओं का विश्लेषण करने का प्रयास भी किया गया है।

चौथा अध्याय है 'चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में बदलती सांस्कृतिक अस्मिता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य और प्रतिरोध'। सांस्कृतिक अस्मिता विकृत हो जाने से जीवन के हर क्षेत्र में उसका असर पडा है। चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में चित्रित इस अपसांस्कृतिक अस्मिता की असलियत को देखने-परखने की कोशिश इसमें हुआ है। साथ ही कविताओं में उपस्थित प्रतिरोध के विभिन्न आयामों को पहचानने का प्रयास भी यहाँ हुआ है।

चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं का संरचनात्मक पक्ष पाँचवाँ अध्याय है। इसमें सांस्कृतिक संकट का प्रक्षेपण के लिए प्रयुक्त भाषा का विवेचन हुआ है। साथ ही भाषा शैली, प्रतीक, बिंब मिथक और फन्तासी का प्रयोग पर भी विचार किया गया है।

उपसंहार में शोध के उपरान्त निकले निष्कर्ष प्रस्तुत है। अंत में संदर्भ व सहायक संदर्भ ग्रन्थों की सूची समाहित है।

इस शोध कार्य को संपन्न करने में कई विशिष्ट व्यक्तियों का सहयोग रहा है। यह शोध कार्य निर्मला कॉलेज मुवाट्टुपुषा के हिन्दी विभाग की अध्यक्ष और सह आचार्य डॉ. सुधा सी के मार्गनिर्देशन में संपन्न हुआ है। उनके प्रोत्साहन, और दिशा-निर्देशन के प्रति मैं सदैव आभारी हूँ। इनके अलावा अन्य कई अध्यापकों से प्रेरणा मिली है, उनके प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ। निर्मला कॉलेज के सभी अध्यापकों के सलाह एवं सहयोग के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे कई मित्रों के प्रोत्साहन एवं सुझाव के बिना यह प्रबंध समर्पण कतई सम्भव न था। बिन्दु, बीना, अन्जु, श्रीजा, अम्बिली, सुकन्या आदि से मैं अपना प्यार और आभार प्रकट करती हूँ।

शोध कार्य के इस मोड पर प्यार भरे सहयोग और प्रार्थना से मेरे साथ जुडे रहनेवाले मेरे पति, माँ-बाप और भाई से मैं सर्वथा कृतज्ञ हूँ। इस शोध-कार्य को संपन्न करने में अपने बेटे हरिकेश से मिले सहयोग और उसकी सहिष्णुता को मैं भूल नहीं सकती। उसको भी प्यार और धन्यवाद। डी.टी.पी कर्ता श्री उदयन कलमशशेरी, प्रूफ संशोधन में मदद करनेवाले अध्यापक बन्धुओं, प्रबंध समर्पण में मदद करनेवाले अन्य सभी मित्रों-बन्धुजनों हितैषियों के प्रति मैं एहसानमन्द हूँ।

सर्वोपरि मैं ईश्वर की कृपा की ऋणी हूँ।

रश्मि एम.एन.

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

पुरोवाक्

पहला अध्याय 1-52

समकालीन हिन्दी कविता और चन्द्रकान्त देवताले की कवि-व्यक्तित्व

1.1 समकालीन शब्द : एक विश्लेषण

1.2 समकालीनता साहित्य के व्यापक परिप्रेक्ष्य में

1.3 समकालीन हिन्दी कविता

1.4 समकालीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

1.4.1 दलित चेतना

1.4.2 स्त्री अस्मिता

1.4.3 राजनीतिक विसंगति

1.4.4 सांस्कृतिक विद्रूपता

1.4.5 पारिस्थितिक सजगता

1.5 चन्द्रकान्त देवताले : कवि व्यक्तित्व

1.5.1 जीवनवृत्त

1.5.2 कार्य क्षेत्र

1.5.3 सम्मान एवं सम्बद्धता

1.6 रचनात्मक व्यक्तित्व

1.6.1 रचना-यात्रा

1.6.2 काव्य संग्रहों का संक्षिप्त परिचय

1.6.3 रचनात्मक व्यक्तित्व

1.6.3.1 कवि-कर्म : कविता ही का जुबानी

1.7 निष्कर्ष

दूसरा अध्याय 53-100

भारतीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक संकट

2.1 संस्कृति : एक वैचारिक भूमिका

2.2 संस्कृति : [illegible]

2.3 संस्कृति के सहयोगी तत्व
2.4 भारतीय संस्कृति : विशेषतायें
2.5 भारतीय संस्कृति : परिवर्तन के विविध आयाम
2.5.1 प्रारंभकालीन संस्कृति
2.5.2 सुल्तानकालीन संस्कृति
2.5.3 मुगलकालीन संस्कृति
2.5.4 अंग्रेज़ी संस्कृति
2.6 भारतीय संस्कृति संकट के दैर में
2.7 भूमंडलीकरण
2.8 भूमंडलीकरण के औजार : उदारीकरण और निजीकरण
2.9 भूमंडलीकरण के विविध पहलू
2.9.1 नव-उपनिवेशीकरण
2.9.1.1 बहुराष्ट्रीय निगम
2.9.1.2 विदेशी सहायता
2.9.1.3 अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थायें
2.9.2 सांस्कृतिक साम्राज्यवाद
2.9.2.1 मीडिया
2.9.2.2 भाषा
2.9.2.3 शिक्षा
2.10 भूमंडलीकरण के विध्वंसात्मक परिवेश
2.10.1 सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
2.10.2 आतंकवाद
2.11 वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास का असर
2.12 निष्कर्ष

तीसरा अध्याय 101-148
चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में सांस्कृतिक संकट के विभिन्न आयाम
3.1 भूमंडलीकरण के स्याह पक्ष
3.1.1 उदारीकरण और निजीकरण की समस्यायें
3.1.2 सांस्कृतिक हमला
3.1.3 आर्थिक गुलामी का चित्रण
3.2 विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास का असर
3.3 पश्चिमीकरण की समस्या
3.4 शहरीकरण की विसंगति
3.4.1 नगर में बदलता गाँव

3.4.2 नष्ट होती ग्रामीण संस्कृति
3.4.3 प्रदूषित पृथ्वी
3.5 साम्राज्यत्व का शिकंजा
3.6 सामाजिक भिन्नता : एक आन्तरिक तनाव
3.6.1 संकीर्ण जातीयता
3.6.2 सांप्रदायिक बैर और आतंक
3.6.3 अल्पसंख्यकों का शोषण
निष्कर्ष

चौथा अध्याय 149-223

चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में बदलती सांस्कृतिक अस्मिता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य और प्रतिरोध

4.1 भूमंडलीय बाज़ार के उपभोगवादी संस्कृति
4.2 क्रय-विक्रय की बाजारु संस्कृति
4.3 मीडिया संस्कृति की चुनौती
4.4 मानवीयता पर कुठराघात
4.5 यान्त्रिक संस्कृति का प्रभाव
4.6 न्याय व्यवस्था का असमर्थता के पर्दाफाश
4.7 अवसरवादी राजनीतिक संस्कृति
4.8 अवमूल्यन की अपसंस्कृति
4.8.1 पारिवारिक मूल्य क्षरण
4.8.2 धार्मिक मूल्य क्षरण
4.8.3 सामाजिक मूल्य क्षरण
4.9 प्रतिरोध की संस्कृति
4.9.1 धार्मिक कट्टरता का विरोध
4.9.2 साम्राज्यत्व का विरोध
4.9.3 बाजारोन्मुख मानसिकता का प्रतिरोध
4.9.4 शोषण का प्रतिरोध
4.9.4.1 स्त्री शोषण
4.9.4.2 वर्ग शोषण
4.9.5 अवमूल्यन का विरोध
4.9.6 विनाशकारी विकास का प्रतिरोध
4.9.7 अमानवीय सामाजिक व्यवस्था का विरोध
4.9.8 राजनीतिक शोषण का विरोध

पाँचवाँ अध्याय 224-271

चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं की भाषिक संरचना

5.1 भाषा और संरचना

5.2 सांस्कृतिक संकट की अभिव्यक्ति में भाषा

5.3 शैलीगत विशेषताएँ

5.3.1 गद्यात्मकता

5.3.2 आत्मकथात्मक ढंग

5.3.4 संवाद का रूप

5.3.5 संबोधन व आह्वान

5.3.6 रिपोर्ट शैली

5.3.7 व्यंग्यात्मकता

5.3.8 आंचलिकता

5.3.9 पूर्व : दीप्ति पद्धति

5.4 बिम्ब योजना

5.5 प्रतीक विधान

5.6 फन्तासी का प्रयोग

5.7 मिथक का प्रयोग

5.8 शब्दों का प्रयोग

5.8.1 मीडिया संस्कृति से जुडे शब्द प्रयोग

5.8.2 बाजार संस्कृति से जुडे शब्द प्रयोग

5.8.3 लोक संस्कृति से जुडे शब्द प्रयोग

5.8.4 अन्य शब्दों का प्रयोग

5.8.4.1 तत्सम

5.8.4.2 अरबी

5.8.4.3 अंग्रेजी

5.8.4.4 मराठी

5.8.4.5 उर्दू

5.8.4.6 हिन्दी

निष्कर्ष

उपसंहार 272-283

संदर्भ ग्रन्थ सूची 284-301